**भारत सरकार**

**रक्षा मंत्रालय**

**रक्षा विभाग**

**राज्य सभा**

**अतारांकित प्रश्न संख्या 1315**

**14 मार्च, 2017 को उत्तर के लिए**

 **मनौवैज्ञानिक आघात से पीड़ित कर्मियों के लिए उच्च गुणवत्तापूर्ण देखभाल**

**1315. कुमारी शैलजा:**

 क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) सरकार द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं कि सशस्त्र बलों के कर्मियों को मनोवैज्ञानिक स्थितियों यथा विकारों तथा सैन्य सेवा के दौरान उत्पन्न 'मानसिक आघात दबाव पश्चात विकार' के लिए उच्च गुणवत्ता पूर्ण देखभाल तथा सहायता मिले, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ख) क्या सरकार सशस्त्र बलों के कर्मियों द्वारा सेवा के दौरान उत्पन्न मनोवैज्ञानिक स्थितियों के कारण लगे दाग को हटाने तथा जागरुकता फैलाने के लिए कोई योजना बनाने का विचार रखती है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ?

**उत्तर**

**रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (डॉ सुभाष भामरे)**

(क): सशस्त्र बलों के कार्मिकों में मनोवैज्ञानिक स्थितियों और विरूपताओं के लिए निषेधात्मक, सुधारात्मक, उत्साहवर्धक और स्वास्थ्यपरक हेल्थकेयर और सहायता मुहैया कराने के लिए सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा (एएफएमएस) द्वारा कई सक्रिय कदम उठाए गए है जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ आधारभूत काउंसलिंग कौशल और युद्ध संबंधी तनाव प्रबंधन को सभी रेंकों के सैन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का एक भाग बनाना, शांति और युद्ध क्षेत्रों में अपनी सेवाएं प्रदान के लिए चिकित्सा और गैर चिकित्सा कार्मिकों को काउंसलिंग में प्रशिक्षण देना, चिकित्सीय प्रशिक्षण और अध्यापन केंद्रों के रूप में कार्यरत सशस्त्र बल अस्पतालों में सुसज्जित मनोचिकित्सीय केंद्रों का रख-रखाव करना, सैनिकों के लिए धर्म-गुरूओं को प्रशिक्षण देना, मेल-जोल के जरिए शिकायतों का निवारण करना, योग को शामिल करना आदि शामिल हैं । मनोचिकित्सीय केंद्रों को सतत रूप से उन्नयित किया जाता है और चिकित्सीय तथा गैर चिकित्सीय काउंसलरों के लिए मानसिक दबाव की रोकथाम और नियंत्रण संबंधी प्रशिक्षण नियमित रूप से चलाए जाते हैं ।

(ख): जागरूकता बढ़ाने और मनौवैज्ञानिक परिस्थितियों के लिए लोगों के मन में निंदा भावना को कम करने के लिए कमांडरों को सुग्राही बनाने, मानव शक्तियों का न्यायसंगत उपयोग केवल प्रमाणिक कार्यों के लिए करने ताकि उन्हें आराम करने का समय मिल सके, व्यायाम, खेलकूद, योग, स्वाध्याय आदि के महत्व पर सैनिकों को शिक्षित करना, यूनिटों आदि में अत्यधिक खतरे के मामले की तत्परतापूर्वक पूर्व पहचान करने जैसे कई सुधारात्मक उपाए किए गए हैं । इस संबंध में जागरूकता लाने के लिए व्याख्यानों, सामूहिक चर्चाओं, सम्मेलनों, निरंतर चिकित्सीय शिक्षा कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है ।

\*\*\*\*\*\*